REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 9 | JUNE - 2024

# भारतीय समाज में महिलाओं के सशक्तिकरण पर जीवन–शैली के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. के.पी. आजाद
प्रभारी प्राचार्य एंव विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग
शा0 कला, वाणिज्य एंव विज्ञान महाविद्यालय रामपुरनैकिन सीधी (म.प्र.)

**सारांश –:**

किसी भी राष्ट्र की परम्परा और संस्कृति उस राष्ट्र की महिलाओं की स्थिति से परिलक्षित होती है। महिलाएँ समाज की रचनात्मक शक्ति होती है। आने वाले कल को सुधरने के लिए हमें आज की महिला की स्थिति में सुधार लाना ही होगा। महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए मेरा सभी भारतवासियों से विनम्र अनुरोध है कि हमें रूढ़िवादी मान्यताओं और परम्पराओं को छोड़कर प्रगतिशील विचारधारा को अपनाना ही चाहिए, इसके लिए महिलाओं का शिक्षित होना अति आवश्यक है। वर्तमान समय में महिलाओं की भूमिका और उनकी जीवन–शैली में परिवर्तन हुआ है। भारत की आजादी, निर्माण व विकास में स्त्रियों की जीवन–शैली में परिवर्तन आये हैं। गाँव व शहरी महिलाओं के स्वयं अर्जन के कारण वो आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होती हैं। अतः वे अपने जीवन से सम्बन्धित अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम होती हैं। परिणामों से स्पष्ट होता है कि शहरी महिलाएँ जीवन–शैली के प्रति अधिक सशक्त हैं।

**मुख्य शब्द :–** सशक्तिकरण, विरोधाभास, निषिद्ध, आत्मविश्वास इत्यादि।

## प्रस्तावना –:

नारी की सुदृढ़ व सम्मानजनक स्थिति एक उन्नत, समृद्ध तथा मजबूत समाज की द्योतक है। भारतवर्ष में पौराणिक काल से ही सूत्र वाक्य **''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमंते तत्र देवता''** मान्य रहा है। यह विचारणीय विषय है कि जहाँ एक ओर भारतवर्ष में लक्ष्मी, सीता, दुर्गा, पार्वती के रूप में नारी को पूजनीय बताया गया है वहीं दूसरी ओर नारी को अबला बताकर परम्परा एवं रूढ़ियों की बेड़ी में भी जकड़ा गया है तथा नारी का विभिन्न स्तरों पर शोषण किया गया है, किया जाता रहा है, और शोषण हो रहा है। लेकिन इसमें कोई मत नहीं है कि स्वतंत्रता के बाद से संविधान के नारी समर्थन वाले अनेकों प्रावधानों को पोषित करते हुए बनाये गये अनेकों कानूनों तथा विभिन्न प्रकार के सरकारी प्रयासों के कारण आज भारत की महिलाओं की स्थिति में गुणात्मक सुधार हुआ है। यही कारण है कि आज महिलायें देश की विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में समान रूप से सहभागी बन रही हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा सेवाओं, आर्किटेक्चर, इंजीनियरिंग जैसे अनेकों क्षेत्रों में महिलाओं की सहभागिता में अप्रत्याशित वृद्धि परिलक्षित हो रही है। इतना ही नहीं कारपोरेट सेक्टर में जहाँ दो दशक पहले तक पुरुषों का ही वर्चस्व था वहाँ महिलायें न केवल अपने उच्च प्रबंधकीय क्षमता का प्रदर्शन कर रहीं बल्कि नेतृत्व भी कर रही हैं। इन्दिरा, नुई, चंदा कोचर, किरण मज़मदार, परमेश्वर गोदरेज, शहनाज हुसैन

इत्यादि अनेकों महिलायें कारपोरेट सेक्टर में अपना वर्चस्व कायम किए हुए हैं। सशक्तिकरण की दिशा में भारतीय महिलाओं के कदम अब पुरुषों की वैसाखी के मोहताज नहीं रहे।

सशक्तिकरण' शब्द का प्रयोग, खास तौर पर स्त्रियों के सन्दर्भ में हाल ही से होना प्रारम्भ हुआ है। प्रथम दृष्टता, इसमें विरोधाभास प्रतीत होता है क्योंकि शक्ति का अर्थ है निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करना और कार्यों को निर्दिष्ट दिशा में आगे बढ़ाना। इस प्रकार की शक्ति भारत के संविधान द्वारा दी गई है, जिसके अनुसार स्त्रियों को बराबर का नागरिक माना गया है और लिंग के आधार पर भेदभाव को निषिद्ध किया गया है। स्त्रियों के सशक्तिकरण की प्रक्रिया उनके द्वारा अपने व्यक्तिगत जीवन में जोर देकर अपनी बात कहने, अपने अन्दर विश्वास पैदा करने और अपने को एक स्त्री के रूप में प्रस्तुत करने से प्रारम्भ होती है और धीरे–धीरे उनके व्यवहार को बदलती है। आर्थिक स्वतन्त्रता उत्पादक संसाधनों के स्वामित्व के अवसर प्रदान करती है। इसके अलावा छोटी–मोटी पूँजी को लगाकर लाभ प्राप्त करने और स्त्री सम्बन्धी तथा सामाजिक मामलों में नेतृत्व सम्भालने के कार्य भी स्त्री सशक्तिकरण के अंग हैं। स्त्री सशक्तिकरण में आत्मविश्वास बढ़ाने, स्वतन्त्र निर्णय लेने की क्षमता और व्यक्तिगत स्वातन्त्रय का भाव भी निहित है। **जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में – "लोगों को जगाने के लिए स्त्रियों को जगाना पड़ेगा। एक बार स्त्री परिवर्तन की ओर बढ़ जाये तो परिवार परिवर्तित होंगे, गाँव परिवर्तित होगा।"** कृषि के विकास में महिलायें अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिसमें फसल काटने के पश्चात् किये जाने वाले कार्य भी शामिल होते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों को परिवार चलाने, ईंधन जुटाने, चारे पानी का प्रबन्ध करने आदि में स्त्रियों की मुख्य भूमिका होती है और उनका अधिकतर समय इस प्रकार के घरेलू काम धन्धों में व्यतीत होता है। वे कृषि सम्बन्धित कार्यों में, विशेष रूप से पर्वतीय क्षेत्रों में व्यस्त रहती हैं, पशु–पालन सम्बन्धी सारा काम उन्हें ही करना पड़ता है। महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया उनमें जोर देकर अपनी बात कहने, अपने व्यक्तिगत जीवन में आत्मविश्वास पैदा करने और स्त्री के रूप में अपनी रक्षा करने से प्रारम्भ होती है और इन्हीं की पूर्ण शक्ति के रूप में उन्हें आर्थिक रूप से स्वतन्त्रता प्राप्त करने और उत्पादक सम्पत्ति पर स्वामित्व स्थापित करने के अवसर दिये जाते हैं। इसके अतिरिक्त उन्हें छोटी पूँजी तथा रकम का संचालन करने और सामुदायिक हित के मामलों में नेतृत्व की भूमिका निभाने के अवसर भी मिलते हैं। महिला सशक्तिकरण में कुशलता जनित आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता और स्वतन्त्रता प्राप्त करना भी शामिल है।

**बन्सल (1998) के अनुसार** – स्त्रियाँ अभी भी आर्थिक मामलों, पारिवारिक मनोरंजन, विवाह, घरेलू सुविधाओं तथा व्यवसाय चुनने के मामलों में सशक्तिकरण से वंचित हैं।

**बगाती (2003) के अनुसार** – स्त्रियों का आर्थिक क्षेत्र में योगदान स्वयं ही समाज में उनके मान, सम्मान तथा भूमिका में सकारात्मक उत्थान लाया है।

**ब्लाइड, टौब एवं टान (2001)** ने यह माना कि स्त्रियों को स्वयं को शक्तिशाली, योग्य तथा स्व–निर्णय पूर्ण व्यक्ति मानने से हतोत्साहित किया जाता है ताकि वे अपने जीवन पर नियन्त्रण न रख सकें। इस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ताओं ने स्त्रियों को अपनी बढ़ी शक्ति का अहसास कराने के लिए खेलों में भाग लेने की सलाह दी है ताकि वे अपनी वास्तविक शक्ति से अवगत हो सकें।

## उद्देश्य

1. शहरी महिलाओं की जीवन–शैली का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण महिलाओं की जीवन–शैली का अध्ययन करना।
3. स्थानीयता का प्रभाव देखने के लिए ग्रामीण व शहरी महिलाओं के सशक्तिकरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

## उपकल्पना–:

1. शहरी महिलाओं के सशक्तिकरण पर जीवन–शैली का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण पर जीवन–शैली का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. ग्रामीण व शहरी महिलाओं के सशक्तिकरण में कोई अन्तर नहीं है।

**न्यादर्श–:** प्रस्तुत अध्ययन के लिए सीधी जिले के 30 ग्रामीण व 30 शहरी महिलाओं को लिया गया। परीक्षण सामग्री एस0के0 बावा और सुमनप्रीत कौर द्वारा निर्मित जीवन–शैली मापनी

| क्रम सं0 | शहरी महिलायें | | ग्रामीण महिलाय | | T | 'p' |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | Mean | S.D. | Mean | S.D. | | |
| 1. | 2.83 | 2.14 | 5.90 | 2.61 | 1.46 | N.S. |
| 2. | 3.33 | 2.08 | 3.40 | 2.55 | 0.13 | N.S. |
| 3. | 7.23 | 3.14 | 6.63 | 2.06 | 0.92 | N.S. |
| 4. | 7.08 | 3.18 | 3.90 | 2.36 | 2.06 | 0.05 |
| 5. | 3.74 | 2.46 | 3.20 | 2.56 | 0.98 | N.S. |
| 6. | 8.11 | 3.38 | 7.70 | 3.46 | 0.55 | N.S. |
| 7. | 4.16 | 2.44 | 3.03 | 2.30 | 2.19 | 0.05 |
| 8. | 8.66 | 3.55 | 7.50 | 2.86 | 1.72 | N.S. |
| 9. | 6-74 | 2.74 | 5.80 | 3.05 | 1.46 | N.S. |
| 10. | 5.41 | 2.91 | 5.13 | 3.10 | 0.43 | N.S. |
| 11. | 4.01 | 2.59 | 2.53 | 2.57 | 2.62 | 0.05 |
| 12. | 4.90 | 2.78 | 3.80 | 2.12 | 2.15 | 0.05 |
| 13. | 6.38 | 2.92 | 7.13 | 2.55 | 1.04 | N.S. |
| 14. | 8.51 | 3.21 | 6.12 | 2.36 | 2.28 | 0.05 |
| 15. | 4.01 | 2.59 | 2.53 | 2.57 | 2.62 | 0.05 |

## परिणाम –:

परिणाम देखने से स्पष्ट होता है कि शहरी महिलाओं में ज्यादा औसत प्राप्त किया और दोनों के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया। ये पूर्णतः सत्य है कि शहरी महिलाओं की जीवन–शैली ग्रामीण महिलाओं की जीवन–शैली से ज्यादा सशक्त हैं। व्याख्या एवं निष्कर्ष महिलायें गाँव की बजाय शहरी नगर में अधिक स्वतन्त्रता का अनुभव करती हैं। ग्रामीण लोगों का जीवन सरल और सादा होता है। वे नगर की तड़क–भड़क और बनावटी जीवन से दूर होते हैं। उनके पास आय भी उतनी नहीं होती है कि वे जरूरत की चीजों के अलावा फैशन पर खर्च करें। ग्रामीण समाज अपेक्षाकृत स्थिर समाज होता है। आखिर क्यों आज बुद्धिजीवी वर्ग महिलाओं के पति बढ़ते हुए अपराधों को देखने के बाद भी उदासीन हैं? क्या आप एक 'महिला विहीन समाज' की कल्पना कर रहे हैं? अगर नहीं तब मेरा आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि महिलायें भी सम्मान की पूर्ण अधिकारी हैं, अतः उन्हें सम्मान देकर, कन्या–भ्रूण हत्याओं पर अंकुश लगाकर दहेज लोभियों का सामाजिक बहिष्कार कर एवं महिलाओं को शिक्षा एवं आत्मनिर्भरता की ओर प्रेरित कर एक स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण में अपनी भागीदारी निभायें।

## सन्दर्भ ग्रन्थ–:


1. बगाती, (2003), माइक्रोकेडिट एण्ड एम्पायरमें टआफ वूमेन, जर्नल ऑफ सोषल वर्क, रिसर्च एण्ड इमलुएषन 4, 19, 35
2. ब्लाइड, टौब एवं टान , (2001) स्पोर्ट पार्टीसियेषन एण्ड वीमे न्स एम्पावरमेंट, एक्सीपीरियेन्सेज ऑफ कालेज एथलीट, इन मेलनिक, एम. जे. (सम्पा) कन्टेमपारेरी इषूज इन सोषियोलोजी आफ स्टोर, केम्पेन, सं. रा. अमेरिका।
3. बन्सल, बी, (1998) जेण्डर एज ए सोर्स ऑफ वेरियेषन इन परसेप्षन ऑफ आटोनोनी ऑफ कल्चरल साइकोलोजीए 14, 21–24
4. जोइण्ट इक्वेलिटी एण्ड हयूमेन राइट्स फोरस
5. बिष्ट, दीपा 2009, नारी सशक्तीकरण के सोपान
6. सिंह आर0एन0 – नारी शक्तिकरण का सच
7. समाचार पत्र – दैनिक जागरण

8. समाचार पत्र – अमर उजाला

डॉ. के.पी. आजाद
प्रभारी प्राचार्य एंव विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग, शा. कला, वाणिज्य एंव विज्ञान महाविद्यालय रामपुरनैकिन सीधी (म.प्र.)